VOL- VIII ISSUE- IX SEPTEMBER 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

छत्रपती राजर्षि शाहु महाराज : जनकल्याणकारी राजा

डॉ. प्रकाश कांबळे.
सहयोगी प्राध्यापक
श्रीमती सुशिलादेवी साळुंखे कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, उस्मानाबाद.

परिचय :

छत्रपती राजर्षि शाहु महाराज का जन्म कोल्हापुर में २६ जून १८७४ को हुआ । उनके भाई पिराजी तथा बापुसाहब घाटगे जी का जन्म १८७६ को हुआ । उनकी माता जी राधाबाई जी की मृत्यु १८७७ में हुई और उनके पिता जी जयसिंगराव जी की मृत्यु २० मार्च १८८६ में हुई । माता जी और पिता जी की मृत्यु से शाहु महाराज को बडा दुख सहना पडा । पिता जी की मृत्यु ज्यादा शराब पीने के कारण हुई थी । इसीलिए उन्होंने निश्चय किया था कि पूरी जिंदगी में शराब को हाथ भी नहीं लगाऊँगा और उन्होंने उस निश्चय का पालन इमानदारी के साथ किया । बाल छत्रपती शाहु महाराज, बापुसाहब, काकासाहब घाटगे और दत्ताजीराव इंगळे इन चार बच्चों की शिक्षा की सुविधा रिजंट आबासाहब ने अच्छी तरह से की । उन्होंने छत्रपती शाहु महाराज को पढाने के लिए अपने नजदिकी अनुभवी, अनुशासनप्रिय, इमानदार कृष्णाजी भिकाजी गोखले जी को नियुक्त किया । उसके बाद २२ मई १८८९ में शाहु महाराज के शिक्षक और मार्गदर्शक के तौर पर स्टुअर्ट मिटफोर्ड फ्रेझर की नियुक्ति हुई ।

फ्रेझर बहुत ही सज्जन, संयमी और विवेकी आदमी थे । अंग्रेजों का अहम, गर्व उनमें नहीं था । ११ अप्रैल १८९० में फ्रेझर ने शाहु महाराज की शैक्षिक प्रगति का प्रतिवेदन दरबार के सामने रखा । उसमें लिखा था कि शाहु को प्रशंसनीय शिष्टाचार और उल्लेखनीय स्मृति का उपहार मिला है । उनमें शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा जबरदस्त है और वे कोशिश भी कर रहे हैं ।

जनकल्याणकारी राजा :

२ अप्रैल १८९४ में छत्रपती शाहु महाराज ने कोल्हापुर के साम्राज्य का अधिकार अपने हाथ में लिया । उस दिन शाहु महाराज सच्चे अर्थों में कोल्हापुर के छत्रपती बने । ३ अप्रैल १८९४ में छत्रपती शाहु महाराज ने अपनी प्रजा को जनकल्याण का पूरा आश्वासन देते हुए अपना घोषणापत्र प्रकाशित किया । वे अपनी प्रजा को कहते थे कि मैं अपने विचार कभी नहीं छोडूँगा और अपनी जान बचाने के लिए कभी किसी की शरण नहीं लुँगा । मरेंगे लेकिन कभी झुकेंगे नहीं ऐसी उन्होंने कसम खायी थी । उनका कहना था कि मैं मरते दम तक बहुजन समाज के उध्दार के पवित्र कार्य को नहीं छोडूँगा । महाराज की देशभक्ति, भाषा का अभिमान व कुल का अभिमान अदितीय था । विंचेस्टर महाविदयालय में अपने गौरव के जवाब में उन्होंने कहा था कि मैं सिर्फ मराठों का राजा नहीं हूँ बल्कि मैं कोल्हापुर का छत्रपती हूँ । जस्टीस के पत्र के अनुसार वे मनुष्य में राजा थे और राजाओं में मनुष्य थे । वे एक दूरदर्शी राजा और समाजसुधारक थे । वे आरक्षण के प्रणेता थे । वे एक शैक्षिक विचारक, समाजसुधारक और लोक शिक्षक थे । उन्होंने सार्वभौमिक मुफ्त शिक्षा का प्रसार किया ।

राजर्षि शाहु महाराज के शिक्षा कार्य के घटक

प्रारंभिक शिक्षा कार्य :

महात्मा फुले जी के बाद आम जनता की शिक्षा और कल्याण के लिए शाहु महाराज ने बहुत ही बडा कार्य किया । उनके शिक्षा के चिंतन में शिक्षा कार्य दिखाई देता है । कोल्हापुर संस्थान में प्राथमिक शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य बनाने का विचार १९१२–१३ में शुरू किया था । उनका विचार था कि लोकतंत्र तब तक नहीं पनपेगा जब तक बहुजन समाज वास्तव में साक्षर नहीं होगा । इसीलिए उन्होंने सोचा था कि अगर अनपढ लोग हमारे पास नहीं आते हैं तो हमें उनके पास जाना चाहिए । उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए एक तत्त्व के रूप में गॉव से शुरूआत की ।

उन्होंने २४ जुलाई १९१७ को प्राथमिक शिक्षा को नि:शुल्क एवं अनिवार्य बनाने का आदेश जारी किया था । उन्होंने १५ अगस्त १९१७ को ग्रामीण क्षेत्रों का निरीक्षण कर रिपोर्ट जारी की थी ।

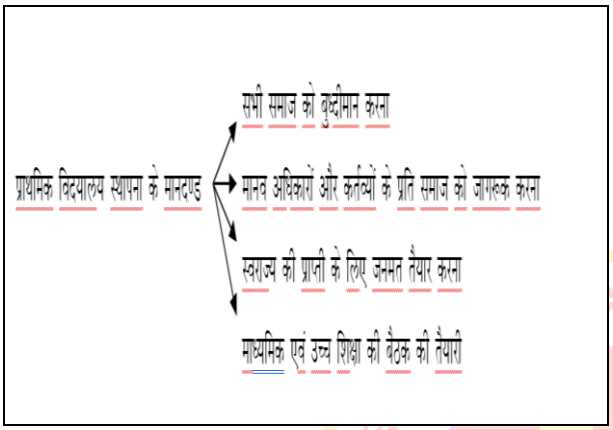

माध्यमिक शिक्षा कार्य :

माध्यमिक विदयालयों को अंग्रेजी स्कूल के नाम से जाना जाता था । माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के बाद और उच्च शिक्षा से पहले दिया जाता है । इसीलिए जिस विदयालय में माध्यमिक शिक्षा मिलती थी उसे माध्यमिक विदयालय कहा जाता था । सन १८६७ में कोल्हापुर संस्थान के कोल्हापुर शहर में पहली अंग्रेजी पूर्व माध्यमिक विदयालय की स्थापना की गई । वह विदयालय कोल्हापुर हायस्कूल के नाम से जाना जाता था । बाद में उस विदयालय की पहचान राजाराम हायस्कुल बन गई । माध्यमिक शिक्षा का काल १० से १६ वर्ष की आयु के बीच मानी जाती थी । अंग्रेजी स्कूल में मैट्रिक तक की पढाई होती थी । लेकिन पैसों की कमी के कारण वहॉ छात्रों की संख्या कम हो गई । यह बात ध्यान में आने के बाद शाहु महाराज ने मैट्रिक तक की शिक्षा मुफ्त की । माध्यमिक शिक्षा के लिए शाहु महाराज द्वारा उठाये गए कदम और कोल्हापुर संस्थान के बाहर से आये हुए विशेष योग्यता वाले बच्चों के लिए की गई आर्थिक मदद यह उचित निर्णय समझा जाता है । कोल्हापुर में विश्वविदयालय हायस्कूल की स्थापना की गई थी । यह हायस्कूल एक ऐसी संस्था थी जो व्यक्तिगत विकासात्मक संस्कार और शिक्षा प्रदान करती थी । ईश्वर की भक्ति और मानव की सेवा इस उददेश्य से इस हायस्कूल की स्थापना की गई थी । शाहु महाराज की ऐसी इच्छा थी कि इस स्कूल से ऐसे छात्र बाहर आएँ जो समाज के सुख–दुख के प्रति सहानुभूति रखते हों । शाहु महाराज ने आश्रम विदयालय नामक एक नया प्रयोग लागू किया था । १९२० में महाराज ने करवीर नगरी में आश्रम विदयालय की स्थापना की थी । यह कल्पना उन्होंने मुम्बई से लाई थी ।

उच्च शिक्षा कार्य :

शाहु महाराज ने उच्च शिक्षा की शुरूआत राजाराम महाविदयालय की स्थापना से की । उसी के साथ–साथ संस्कृत विषय पढाने के लिए संस्कृत महाविदयालय की स्थापना की थी । शाहु महाराज ने बहुजन समाज के बच्चों को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान किए । कृषि को महत्त्व देते हुए कृषि विषयक पाठयचर्या की शुरूआत की थी ।

तांत्रिक शिक्षा कार्य :

शाहु महाराज का विचार था कि कृषि के साथ–साथ व्यापार और उच्च गुणवत्ता वाले उदयोगों को चलाया जाए तो समाज प्रगति कर सकता है । १९१२ में व्यावसायिक शिक्षा के लिए जयसिंगराव टेक्निकल इन्स्टिटयूट की स्थापना की थी जहॉ बच्चों को तांत्रिक शिक्षा दी जाती थी । जिनगर लोगों के लिए शाहु महाराज ने औदयोगिक स्कूल की स्थापना की गई थी ।

महिला शिक्षा कार्य :

शाहु महाराज ने महिला शिक्षा के प्रसार के लिए तीव्र प्रयास किए । महाराज का असर दूसरों पर पडता था । महिला शिक्षा के माध्यम से उन्होंने इस विचार का परिचय दिया था कि उनका जीवन अर्थहीन नहीं बल्कि एक सामाजिक पूजा है । इसीकारण उन्हें महिला शिक्षा के उदधारक कहा जाता था । महाराज का कहना था कि महिला शिक्षा यह महिलाओं के मानसिक विकास के लिए आवश्यक है । इसीलिए उन्होंने अपनी बहु इंदुदेवी को शिक्षा के लिए प्रेरणा दी । पुरानी रूढी और परंपराओं के नुसार महिलाओं को शिक्षित करना पाप माना जाता था । महिलाओं को परंपरा से बाहर निकालने के लिए उन्हें शिक्षा की बहुत आवश्यकता थी । महाराज का कहना था कि अगर हम एक पुरूष को शिक्षा देते है तो सिर्फ एक ही पुरूष शिक्षित होता है लेकिन अगर हम एक महिला को शिक्षा देते हैं तो उसका पूरा परिवार शिक्षित होता है । शिक्षा के द्वारा महिलाओं को खुद का विकास करना है । स्वावलंबन, स्वाभिमान, आदर्श और समर्थ बनने के लिए महिलाओं

को शिक्षा लेनी है । महाराज का महिलाओं के प्रति मानवतावादी दृष्टिकोण था इसीलिए उन्होंने महिला शिक्षा प्रसार के लिए एक आदेश जारी किया था । उनकी आंतरिक इच्छा थी कि अछुत और दलित लडकियों को शिक्षा मिलनी चाहिए इसी कारण उन्होंने छात्रवृत्ती योजना शुरू की थी । महिलाओं की शिक्षा के लिए शाहु महाराज ने अलग स्कूल सीापित किए थे । महाराज ने राजाराम कॉलेज में शिक्षा लेनेवाली लडकियों की पूरी फीस माफ की थी । राधाबाई आक्कासाहेब महाराज इस नाम से छात्रवृत्ती महिलाओं को शिक्षा के लिए दी जाती थी ।

छात्रावास की सुविधा :

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि, शाहु महाराज की शैक्षिक पहुँच का मुख्य स्रोत छात्रावास शिक्षा का प्रावधान था । घर से दूर का घर मतलब छात्रावास, इस भावना के साथ शाहु महाराज ने बच्चों को शिक्षित करने का बहुत बडा कार्य अपने हाथ लिया था । महाराज ने सभी जाति के बच्चों के लिए एक छात्रावास कोल्हापुर में शुरू किया था । उस छात्रावास के लिए एक उच्चवर्णीय अधिकारी नियुक्त किया गया लेकिन उसने सिर्फ उच्चवर्ण के बच्चों को ही छात्रावास में प्रवेश दिया । इसलिए महाराज ने अपना निर्णय बदलते हुए सभी जाति के लिए अलग अलग छात्रावास की निर्मिती की । इसके पीछे महाराज का उददेश्य था कि गुलामी खत्म हो जाए ।

पटवारी विदयालय की स्थापना :

शाहु महाराज ने १९१९ में पटवारी विदयालय की स्थापना की । कुलकर्णी वतन बंद होने के बाद चावडी का दस्तावेज पटवारी के पास आ गया । उस समय शिक्षा का लक्ष्य था कि बहुजन समाज में धार्मिक और सामाजिक जागरूकता आ जाए । वैदिक शिक्षा के लिए सन १९१९ में श्री शिवाजी वैदिक विदयालय की स्थापना की गई । शाहु महाराज ने उदारता से शिक्षा में निवेश किया । शिक्षा पर खर्च करना एक मानवीय निवेश था ऐसा उनका मानना था ।

शूद्रों की शिक्षा :

शाहु महाराज को शूद्र जाति के बच्चों के साथ–साथ उनकी शिक्षा की भी चिंता थी । उन्होंने कहा था कि रियासतें लेने वाला समाज लंगडे और कमजोर घोडे के समान होता है इसीलिए उसे अलग से खिलाना पिलाना पडता है । दूसरे शब्दों में उनका विचार था कि अछूत और वंचितों को शिक्षा से दूर नहीं रखा जा सकता है । उन्होंने बलवानों के बजाय कमजोरों की देखभाल करना अपना पहला कर्तव्य माना था इसीलिए उन्हें विशेष रियासतें दी थी । कमजोर और वंचित वर्गो की शिक्षा के लिए मौखिक सहानुभूति दिखाने के बजाय शाहु महाराज ने उनके लिए स्कूलों और छात्रावासों के दरवाजे खोल दिए थे ।

निष्कर्ष :

शाहु महाराज एक सक्रिय राजा थे । उनका केवल २८ साल का कार्यकाल रहा । २० वर्ष की आयु में ही उन्हें कोल्हापुर संस्थान के संचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी । शुरू में वे छत्रपती, महाराज, राजर्षि और सार्वजनिक नेता आदि नाम से परिचित थे । महाराज की यात्राओं से उन्हें देश की, देशवासियों की, देश की संस्कृति और ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी पता चली । महाराज ने अपने जन्मदिन पर यानी २६ जुलाई १९०२ को पिछडे वर्गो के लिए ५० प्रतिशत आरक्षण की घोषणा की थी । इतिहास में किसी भी राजा ने अपने जन्मदिन पर आरक्षण का अमूल्य तोहफा नहीं दिया है । उन्होंने सार्वजनिक शिक्षा के माध्यम से जनता को अंधश्रध्दा और अज्ञानता से मुक्त करने के लिए भरसक कोशिश कीं । बहुजन समाज के उध्दार के लिए महाराज ने प्राथमिक शिक्षा के दवार खोल दिए । अनिवार्य एवं नि:शुल्क एवं प्राथमिक शिक्षा की नींव से शिक्षा के प्रसार में तेजी लाई थी । उन्होंने शिक्षा को जीवन शिक्षा बनाया था । उनके शैक्षिक विचार वंचित और पिछडे वर्गो को उनकी गुलामी से मुक्त करने वाले थे और उन्हें मानवीय गरिमा हासिल करने की कोशिश उन्होंने की । इसी वजह से उन्हें पिछडे वर्ग और दलितों के उध्दारकर्ता कहा जाता है । उनका सामाजिक परिवर्तन मुख्य रूप से शिक्षा के माध्यम से लगातार शुरू था । कुछ लोग महाराज को क्रांतिकारक मानते हैं, कुछ उन्हें अलौकिक पुरूष मानते हैं, जबकि अन्य उन्हें लोगों का राजा, बडे दिल का राजा मानते हैं । वे आम आदमी के गुणों को परखने और उनकी सराहना करने में माहिर थे । उनमें मनुष्य के अंतर्ज्ञान को समझने की क्षमता थी । वे असभ्य और अहंकारी लोगों से निपटने में सफल रहें । उन्होंने अपने कंधों पर महात्मा फुले जी की सामाजिक क्रांति का झंडा लहराया और उन्होंने डा.

बाबासाहब आंबेडकर जैसे दलितों के उभरते नेतृत्त्व की मदद के लिए अपना हाथ बढाया । उनकी विशाल और व्यापक दृष्टि के कारण समाज के सभी वर्गों को खुद को विकसित करने का अवसर मिला । महाराज दिल से उदार थे । इस महामानव की मृत्यु मुंबई में ६ मई १९२२ में दिल का दौरा पडने से हुई तब वे सिर्फ ४८ साल के थे । बहुजन समाज के दिलों में बसने वाले शाहु महाराज अमर हो गए ।

संदर्भ :

1. जयसिंगराव पवार, राजर्षि शाहु स्मारक ग्रंथ, २००७, मुंबई, इंडिया प्रिंटिंग हाऊस.
2. डॉ.सहदेव चौगुले, पाथेय भाग – १ ;२०१२द्ध, कोल्हापूर, रिया पब्लिकेशन्स.
3. डॉ.के.यु.घोरमोडे, डॉ.कला घोरमोडे, शैक्षणिक विचारवंत भारतीय व पाश्चात्य (२००६), नागपूर, विदया प्रकाशन.
4. प्रा.नानासाहेब साळुंखे, शाहुंच्या आठवणी (२०१६), कोल्हापूर, वृषाली प्रकाशन.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com